3 तृतीय अध्याय : शोध विधि

3.1 प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा किसी भी विद्यार्थी की शैक्षणिक यात्रा की आधारशिला होती है। यह वह स्तर है जहाँ बच्चों के बौद्धिक, भाषाई, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की नींव रखी जाती है। विशेषकर भाषा शिक्षण की दृष्टि से यह कालखंड अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इसी दौरान बच्चों में सोचने, समझने, अभिव्यक्त करने तथा संवाद स्थापित करने की क्षमता विकसित होती है। वर्तमान समय में जब पाठ्यपुस्तक-केंद्रित, रटंत शैली की पढ़ाई आलोचना का विषय बनी हुई है, तब बाल साहित्य आधारित शिक्षण एक विकल्प के रूप में उभर रहा है, जो विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास को ध्यान में रखता है।

किसी भी शोध कार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें किस प्रकार की विधियों और उपकरणों का प्रयोग किया गया है। वर्तमान शोध अध्ययन में "प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बाल साहित्य की भूमिका" को समझने हेतु वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित तरीके से डेटा संकलन, प्रतिचयन तथा विश्लेषण की प्रक्रिया अपनाई गई है। शोध विधि अध्याय में प्रयुक्त प्रतिचयन प्रक्रिया, अध्ययन की समष्टि, उपकरणों की जानकारी, कार्यप्रणाली आदि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि बाल साहित्य का उपयोग प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में किस प्रकार किया जा रहा है, उसका प्रभाव विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों पर क्या पड़ता है, तथा इससे भाषा अधिगम की प्रक्रिया में क्या बदलाव आता है। साथ ही, यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान शिक्षण विधियों का मूल्यांकन करते हुए बाल साहित्य को हिंदी शिक्षण का अभिन्न अंग बनाकर भाषा को किस प्रकार अधिक जीवंत, आकर्षक और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

3.2 शोध की प्रकृति एवं स्वरूप

यह शोध वर्णनात्मक (Descriptive) तथा सर्वेक्षण आधारित (Survey-Based) है। इसमें विभिन्न हितधारकों (शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक) की राय व अनुभवों को एकत्र कर उनका विश्लेषण किया गया है।

3.3 शोध अध्ययन की समष्टि

वर्तमान शोध अध्ययन की समष्टि में बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला के जलालपुर पंचायत अंतर्गत स्थित प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 3 से 5 तक के शिक्षक, विद्यार्थी, तथा उनके अभिभावक को शामिल किया गया है। यह समष्टि इसलिए चयनित की गई क्योंकि यह क्षेत्र ग्रामीण परिवेश में स्थित है और बाल साहित्य के प्रभाव का अध्ययन इस संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

3.4 प्रतिचयन प्रक्रिया

शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए गैर-संभाव्यता नमूनाकरण विधि के अंतर्गत उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण (Purposive Sampling) का प्रयोग किया गया है। इस विधि के अंतर्गत शोधकर्ता ने विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु चयनित व्यक्तियों को शोध में सम्मिलित किया।

प्रतिचयन की संख्या इस प्रकार है:

समूह	संख्या
शिक्षक	30
विद्यार्थी	30
अभिभावक	30

तालिका-3.4.1: शोध में सम्मिलित प्रमुख हितधारक

इस प्रकार कुल 90 प्रतिभागियों को शोध प्रतिचयन में शामिल किया गया।

3.5 प्रदत संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण विधियाँ

शोध अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रश्नावली विधि को प्राथमिक डेटा संकलन उपकरण के रूप में अपनाया गया। इसके अंतर्गत तीनों हितधारकों के लिए पृथक प्रश्नावलियाँ तैयार की गईं:

3.5.1 शिक्षकों के लिए प्रश्नावली

इसमें बाल साहित्य के उपयोग, शिक्षण प्रक्रिया में उसके प्रभाव आदि से संबंधित 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्न शामिल किए गए।

3.5.2 विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली

इसमें बाल साहित्य के प्रति रुचि, समझ, एवं भाषा विकास आदि से जुड़े 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्न शामिल किए गए।

3.5.3 अभिभावकों के लिए प्रश्नावली

इसमें बच्चों की भाषा संबंधी प्रगति, घर पर बाल साहित्य की उपलब्धता एवं सहयोग आदि से संबंधित 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्न सम्मिलित थे।

3.6 प्रदत (डेटा) विश्लेषण की प्रक्रिया

इस शोध में एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण चरणबद्ध ढंग से किया गया। शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक– तीनों हितधारकों की प्रतिक्रियाओं को श्रेणीबद्ध कर तालिका में कोडित किया गया। 'हाँ' और 'नहीं' उत्तरों की आवृत्तियाँ गिनी गईं, तथा औसत, मानक विचलन, मानक त्रुटि और प्रसरण की गणना कर उत्तर प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।